

आज़ादी का देवता

सोम नाथ खोसा

गांधी जी का चित्रमय जीवन-परिचय

जोकि २० अत्यधिक लोकप्रिय समाचार पत्रों (लंका के एक दैनिक सहित) में १०० सप्ताह तक प्रकाशित हुआ है।



जन-सम्पर्क समिति
राष्ट्रीय गांधी जन्म शताब्दी समिति
६, राजघाट कालोनी, नई दिल्ली-१
तार : शताब्दी

१०० सप्ताह में गांधीजी की चित्रमय जीवनी—

इन-इन समाचार पत्रों में प्रकाशित हो चुकी है :

भारत—हिन्दु, नागपुर टाइम्स, लोकसत्ता, भारत ज्योति, जनशक्ति, नवशक्ति, अमृतबाजार पत्रिका, ट्रिब्युन, आसाम ट्रिब्युन, आसाम वानी, हिन्द समाचार, नई दुनिया, मातृ भूमि, दीना मानी, समाज, आन्ध्र प्रभा, संयुक्त कर्नाटक, अमर उजाले, गुजरात मित्र।

लंका — थीनाकरण

हिन्दी रूपान्तरकार : **सुरेन्द्र कुमार शर्मा**, नई दिल्ली-१

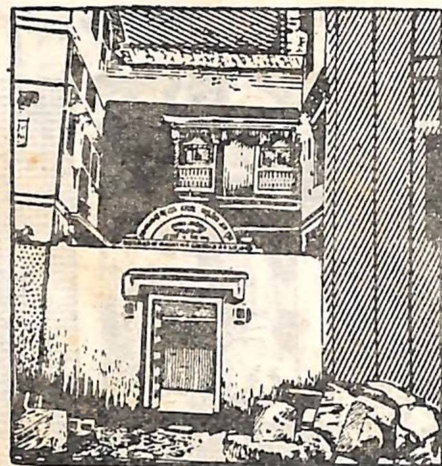
१ जन्म और माता-पिता











२ अक्तूबर १८६९ को पोरबन्दर में गांधी जी का जन्म हुआ । पुतली बाई और करमचंद गांधी के तीन पुत्र थे । सबसे छोटे का नाम था मोहनदास । करमचन्द गांधी काठियावाड़ की तीन रियासतों के एक के बाद एक करके लगातार प्रधान मंत्री रहे थे । करमचन्द स्पष्टवादी थे ।, सत्यनिष्ठ थे और अपनी चारित्रिक दृढ़ता तथा स्वामीभक्ति के लिए प्रसिद्ध थे । जिस छोटे से घर में गांधी जी का जन्म हुआ, उसे आज "कीर्ति मंदिर" कहा जाता है ।

२ संस्कार











अत्यधिक धार्मिक विचारों व संयमी स्वभाव वाली पुतली बाई पुराने ढंग की हिन्दू स्त्री थीं। अपने परिवार की सेवा करना ही उनका ध्येय था। इन सभी बातों का बालक मोहन पर गहरा असर पड़ा। गांधी जी के बाल मन पर दूसरा गहरा असर राजा हरिश्चन्द्र नाटक का पड़ा, जिन्हें सत्य का अनुसरण करते हुए तरह-तरह की विपत्तियाँ झेलनी पड़ीं, लेकिन अन्त में उनकी जीत हुई। बालक मोहन ने भी यही ध्येय अपनाया।

३ विद्याध्ययन









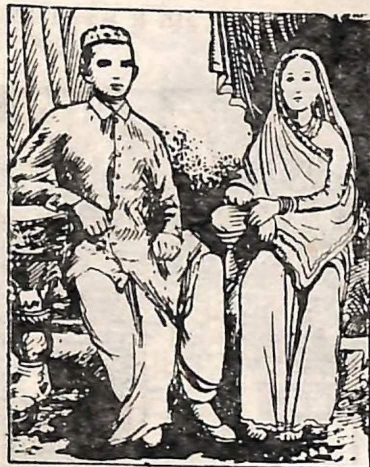


पहले पोरबन्दर के प्राइमरी स्कूल में और फिर राजकोट के एलबर्ट हाईस्कूल में गांधी जी की पढ़ाई हुई। इसके दौरान उन्होंने किसी क्षेत्र में भी अपनी विशेषता सिद्ध नहीं की, न ही किसी खेल में भाग लिया या संगी-साथियों से मेल जोल रखा। स्कूली किताबों के अलावा दूसरी किताबें कम ही पढ़ीं लेकिन यह विद्यार्थी अपने अध्यापक की इज्ज़त बराबर करता रहा। हालाँकि एक बार अध्यापक से संकेत मिलने पर भी उसने अपने साथी की कापी से सवालों के हल नहीं उतारे।

४ कस्तूरबा, लक्ष्मीदास











तेरह साल की उम्र में कस्तूरबा से शादी हुई। शादी कुल मिलाकर बच्चों का खेल-सी लगी। गांधी शुरू-शुरू में ईर्ष्यालु स्वभाव वाले पति सिद्ध हुए। अपनी पत्नी को आदर्श स्त्री बनाना चाहते थे। सबसे बड़े भाई, लक्ष्मीदास को भी बहुत मानते थे। पिता की मृत्यु के वाद लक्ष्मीदास ने ही उनकी पढाई-लिखाई का बोझ उठाया और कानून की शिक्षा प्राप्त करने के लिए इंग्लैंड भेजा।

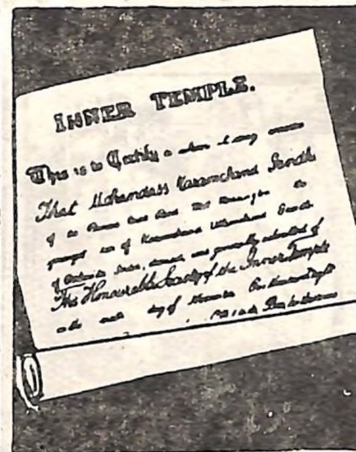
५ लन्दन में











गांधी जी से पवित्र व सादा जीवन व्यतीत करने की प्रतिज्ञा ले लेने पर ही पुतलीबाई ने उन्हें इंग्लैंड जाने की अनुमति दी। कुछ दिनों तक उन्होंने अंग्रेजी कपड़े पहनने और वैसा ही व्यवहार करके की कोशिश की लेकिन फिर शीघ्र ही वे सादा जीवन व्यतीत करने लगे। परिवार की परम्पराओं के अनुसार वे शाकाहार करते थे। फिर उन्होंने सदा शाकाहारी रहने का प्रण किया और लन्दन शाकाहारी समाज के सदस्य बन कर सक्रिय कार्य करने लगे। जून १८९१ में उन्हें बैरिस्टर की उपाधि मिली।

६ दक्षिण अफ्रीका में









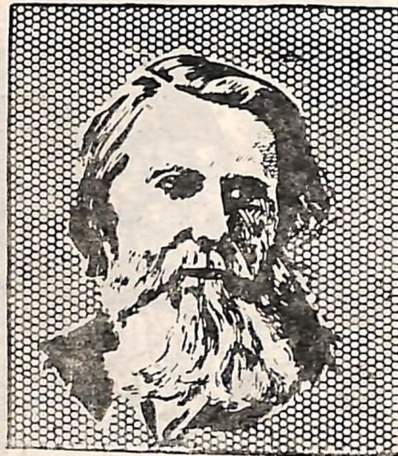
१८९३ में एक मुकदमे की पैरवी करने के लिए गांधी जी दक्षिण अफ्रीका गए। मुकदमे का काम जल्दी ही खत्म हो गया लेकिन गांधी जी भेदभाव के विरुद्ध भारतीयों के अधिकारों की रक्षा व क़रारबद्धश्रम की रक्षा के मुकदमे अदालतों में लड़ते हुए सवा दो साल तक रहे। इस काम में उन्हें पोलक और कालेनबाश सरीखे अनेक यूरोपीय मित्रों ने सहयोग दिया।

७ आश्रमों की स्थापना











टॉल्स्टॉय और रस्किन के बिचारों ने गांधी जी को सादे सामूहिक जीवन के संदर्भ में बहुत प्रभावित किया। फ़ीनिक्स और टॉल्स्टॉय फ़ार्म के आश्रमों की स्थापना के पीछे ये विचार ही प्रमुख थे। "आधुनिकों" में तीसरे व्यक्ति जैन दार्शनिक व विद्वान राज चन्द्र थे जिन्होंने गांधी जी की विचारधारा को बहुत प्रभावित किया।

८ कठिन क्षणों में सेवा कार्य











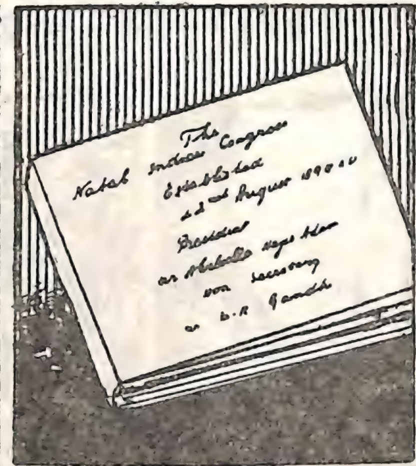
गांधी जी का बुराई से विरोध था लेकिन उनके विरोध में बुराई करने वाले के प्रति दयाभाव शामिल रहता था। बोअर युद्ध और जुलू विद्रोह के दौरान उन्होंने भारतीय आप्रवासियों के एम्बुलैंस व स्ट्रेचर उठाने वाले दल बनाकर सरकार का साथ दिया। इन सेवाओं के लिए गांधी जी को पदक मिले।

६ भारतीयों का संघर्ष









१८९४ में गांधी जी ने नैटाल इण्डियन कांग्रेस की स्थापना की थी। इसके लक्ष्य इण्डियन नैशनल कांग्रेस जैसे ही थे। बाद में ब्रिटिश भारतीयों ने ट्रान्सवाल में भारतीयों पर व्यापार, आगमन तथा निवास के सम्बन्ध में लगाए हुए प्रतिबन्धों के खिलाफ़ जोरदार आन्दोलन किया। रजिस्ट्री के "काले" कानून के खिलाफ़ चले आन्दोलन में गांधी जी ने हज़ारों रजिस्ट्री कार्डों की शानदार होली जलाई।

१० टॉल्स्टॉय फ़ार्म











निष्क्रिय विरोध का संघर्ष बहुत दिनों तक चलना था। हज़ारों सत्याग्रही गिरफ़्तार हुए, उनकी सम्पत्ति छिनी, कारोबार खत्म हुए। गांधी जी ने कालेनबाश की दी हुई जमीन पर सत्याग्रहियों के परिवारों को बसाने के लिए टॉल्स्टॉय फ़ार्म नामक एक आश्रम बनाया। यहां खेती होती, फल उगते, छोटी मोटी दस्तकारी की जाती, और स्कूल चलाए जाते। सामूहिक जीवन की दिशा में यह बड़ा सुन्दर प्रयोग था।

११ गोखले : पदयात्रा

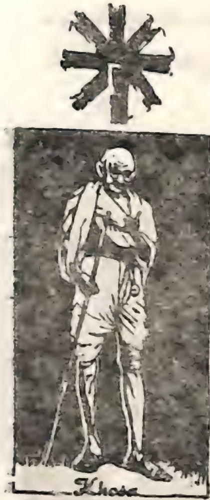






१९१२ में गोखले दक्षिण अफ्रीका गये और उन्होंने स्वयं भारतीयों की समस्याओं का अध्ययन किया। वे सरकारी अफ़सरों से मिले और उनसे यह आश्वासन मिलने पर कि भारतीयों की समस्याएं हल करने के शीघ्र कदम उठाए जाएंगे, गोखले ने भारतीयों को आन्दोलन धीमा करने की सलाह दी। सरकार ने पांच पौण्ड का चुंगी कर खत्म नहीं किया : इसके फलस्वरूप भारतीय लोग बहुत निराश हो गए। नवम्बर १९१३ में गांधी जी ने इस कानून की अवज्ञा करते हुए नैटाल से ट्रान्सवाल तक के मार्च की अगुवानी की।

१२ शहीद







गांधी जी के बाद पोलक और कालेनवाश को गिरफ्तार करके जेल में डाल दिया गया। महिलाओं की भी गिरफ्तारियां हुईं। बाद में सरकार ने इन्हें रिहा करके सॉलोमन जांच आयोग बिठाया। सरकार के साथ शांति प्रयत्नों में मध्यस्थता करने के लिए सी० एफ़० एण्ड्यूज़ और पीयर्सन दक्षिण अफ्रीका पहुँचे। गांधी जी ने नागप्पा और वलिअम्मा जैसे शहीदों की मूर्तियों के अनावरण समारोह में भाग लिया।

१३ महात्मा रवाना हुए







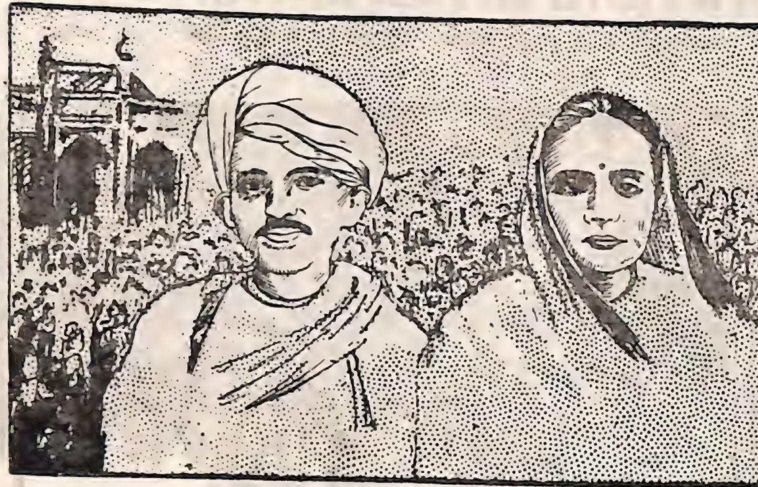


"इण्डियन रिलीफ़" कानून पास हुआ और गांधी जी ने स्वदेश लौटने का इरादा किया। विदाई के अवसर पर शुभकामनाएं प्राप्त करने के बाद महात्मा गांधी जुलाई १९१४ में दक्षिण अफ्रीका से रवाना हुए। रास्ते में जब इंग्लैण्ड पहुँचे तो विश्व युद्ध शुरू हो गया। गांधी जी ने भारतीय स्वयंसेवकों की एक टुकड़ी संगठित करना शुरू की। दिसम्बर के महीने में गांधी और कस्तूरबा भारत आने के लिए जहाज पर सवार हो गये।

१४ वापसी









भारत पहुँचने के लिए समुद्री यात्रा करते हुए गांधी जी के मन में बार बार यह ख्याल आता—पता नहीं, आगे क्या होता है ! वे हमेशा भगवान से प्रार्थना करते रहते—हे प्रभु मुझे रास्ता दिखा, प्रकाश दिखा । कस्तूरबा के साथ भारत पहुँचने पर सीधे-सादे काठियावाड़ी कपड़े पहन कर, वे अपने राजनीतिक गुरु गोखले के पास मार्गदर्शन के लिए गये । उन्हें सलाह मिली—भारत की समस्याओं का नजदीक से अध्ययन करो और इस दौरान राजनीति के बारे में कुछ मत कहो ।

१५ शानदार स्वागत









जिस मनुष्य ने दक्षिण अफ्रीका में अपने देशवासियों के आदर और मानव मात्र के सम्मान के लिए सत्याग्रह का आन्दोलन अपूर्व वीरता से चलाया था, उसका हर कहीं बहुत शानदार स्वागत हुआ। गांधी जी ने हर कहीं—सुदूर उत्तर और दक्षिण में—यात्रा की, अधिकतर रेलगाड़ी के तीसरे दर्जे में। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर के दर्शन की खातिर शान्ति निकेतन की यात्रा तीर्थयात्रा से किसी कदर कम न थी।

१६ सभी ने सम्मान दिया











मद्रास में नटेसन ने महात्मा गांधी को ईश्वरीयता तथा संत-सुलभ बुद्धि-विवेक से सम्पन्न बताया और कस्तूरबा को पत्नी-सुलभ गुणों का अवतार । मई १९१५ में गांधी जी अहमदाबाद के निकट कोचराब में जा बसे । यहीं उन्होंने सत्याग्रहाश्रम की नींव डाली । युद्धकाल की उनकी सेवाओं के उपलक्ष्य में उन्हें कैसर-ए-हिन्द तथा अन्य पदकों से अलंकृत किया गया ।

१७ चम्पारन सत्याग्रह









गांधी जी पर बाहरी दिखावे का असर न होता था। बनारस में उन्होंने राजाओं नवाबों के विलासिता प्रेम की निंदा की। इलाहाबाद में उन्होंने नैतिकता विहीन भौतिक प्रगति को खोखला बताया। भारत में गांधी जी ने सत्याग्रह का पहला परीक्षण बिहार के चम्पारन में सन् १९१७ में हुआ जिसके फलस्वरूप दोषपूर्ण नील प्रणाली की जांच-पड़ताल हुई और उसे रद्द कर दिया गया।

१८ साबरमती आश्रम











१९१७ में कोचरब में प्लेग की महामारी फैली। गांधी जी अपना आश्रम साबरमती ले गये। उसका निवास बना—हृदय कुंज कस्तूरबा स्वयं एक अलग कुटी में रहती थीं। क्योंकि उनके पतिदेव ने ब्रह्मचर्य का व्रत ले लिया था। पास ही एक मैदान था जिसमें आश्रमवासी सुबह-शाम एकत्र होकर गांधी जी के साथ प्रार्थना सभा में भाग लेते।

१६ फिर सत्याग्रह





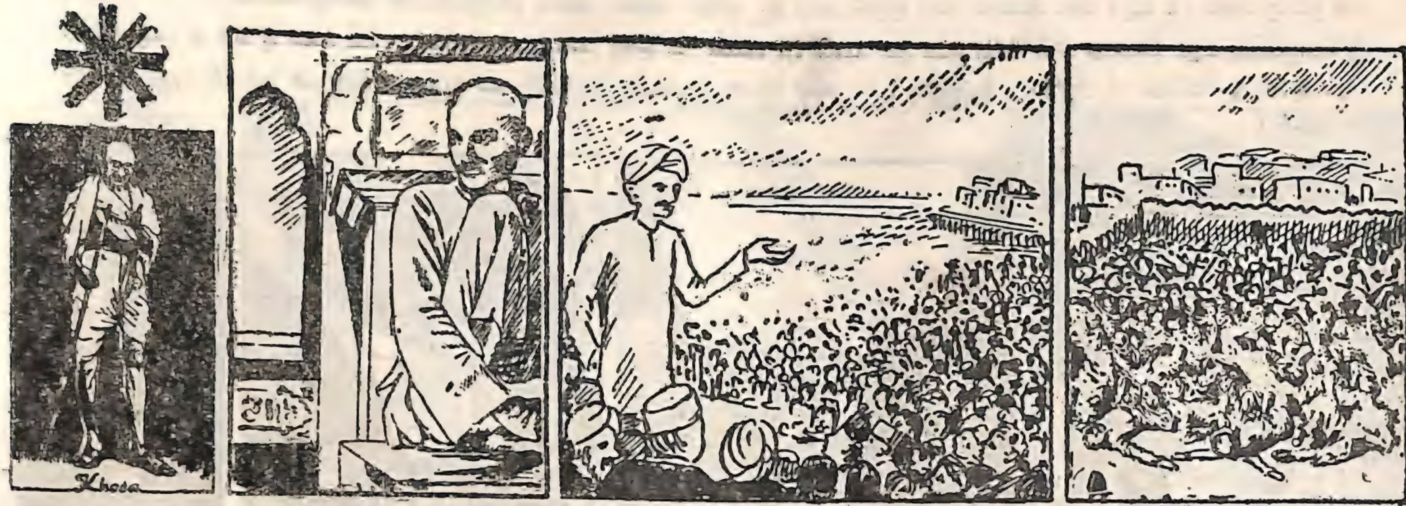






यह वह आश्रम था जब भारतीय राजनीति पर लोकमान्य तिलक का प्रभाव प्रमुख था। लेकिन सन् १९१८ में सत्याग्रह के सहारे गांधी राष्ट्रीय नेता के रूप में प्रकट हुए— अकालग्रस्त खेड़ा जिले में लगान की माफी की मांग लेकर हुआ सत्याग्रह और अहमदाबाद के मिल मजदूरों की हड़ताल जिसमें हड़तालियों का साहस बहाल रखने के लिए उन्होंने स्वयं उपवास रखा। पेड़ की छाया में हुई एक प्रार्थना सभा में गांधी जी ने अनुशासन और कर्तव्यपालन पर ध्यान देने के अपील की, केवल अधिकारों पर ही नहीं।

२० कड़ुवा फल



विश्व युद्ध समाप्त होने पर भी भारत को आजादी न मिली बल्कि सरकार ने दमनचक्र और तेज कर दिया। गांधी जी ने सन् १९१९ के रॉलट एक्ट का विरोध करने के लिए देशव्यापी हड़ताल का आह्वान किया। मस्जिदों में और समुद्रतट पर जाकर उन्होंने लोगों से सत्याग्रह करने की अपील की, बम्बई और अहमदाबाद में जाकर उपद्रवकारियों को शांत किया। लेकिन पंजाब के जलियांवाला बाग ने बर्बर निर्दयता से होता हुआ नर-संहार देखा।

२१ जलियाँवाला बाग का नर-संहार











जलियांवाला बाग में सरकार की दमन-नीति का विरोध करने के लिए हजारों की तादाद में लोग इकट्ठे हुए। "उन्हें सबक सिखाने के लिए" सरकार ने सिपाहियों को निहत्थी भीड़ पर गोलियां बरसाने का हुक्म दिया। सैकड़ों की जान गई। बाद में सैनिक कानून थोपा गया और आतंक फैलाया गया। दुखी होकर गांधी जी ने अपने युद्ध पदक लौटा दिये और ऐसी खराब सरकार से असहयोग करने की ठान ली।

२२ असहयोग का जन्म











इण्डियन नैशनल कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन ने असहयोग को अपनी सहमति दे दी और साथ ही अदालतों, शिक्षा संस्थाओं तथा विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करने का निश्चय कर लिया। गांधी जी की राय थी कि अगर खिलाफत और पंजाब के कारनामों का इलाज हिंसा से नहीं करना है तो केवल असहयोग का रास्ता ही बाकी रहता है। नवम्बर १९२० में गुजरात विद्यापीठ की स्थापना राष्ट्रीय जागरण का प्रतीक थी।

२३ स्वराज्य निधि—स्वदेशी

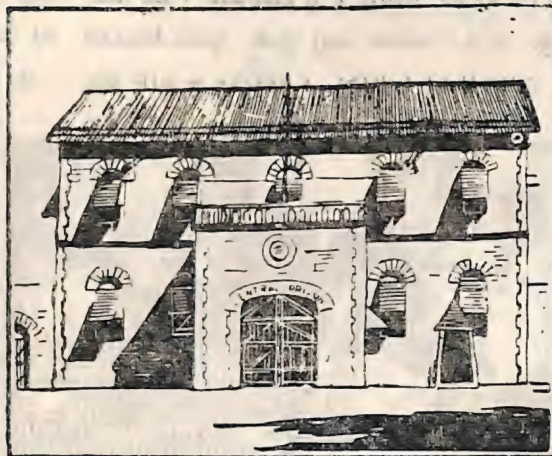


गांधीजी का नारा था—"एक साल में स्वराज्य।" विभिन्न विचारधारा वाले नेतागण मद्रास में एकत्र हुए लेकिन केवल कुछेक को ही यह विश्वास आया कि स्वराज्य इतनी जल्दी मिल जाएगा। गांधी जी की अपील पर जनता ने एक करोड़ रुपये की स्मारक निधि लोकमान्य तिलक के लिए जुटा ली। लोकमान्य ने १ अगस्त १९२० को देहत्याग कर दिया था। एक साल बाद विदेशी कपड़े की एक बड़ी होली जली जिससे स्वदेशी के युग का शुभारम्भ हुआ।

२४ यरवदा से बेलगांव









१९२२ में ग्रहण लगा—चौरी-चौरा की हिंसात्मक घटनाओं के बाद गांधी जी ने असहयोग आन्दोलन वापस ले लिया। उन्हें **यंग इण्डिया** में राजद्रोह सम्बन्धी लेख लिखने के अपराध में बंदी बनाया गया और १८ मार्च को छह साल के कारावास की सजा सुना दी गई। मगर एपेंडिसाइटिस के आपरेशन की वजह से सजा पूरी होने से पहले ही उन्हें रिहा कर दिया गया। १९२४ में वे फिर बेलगांव कांग्रेस में सर्वाधिक महत्वपूर्ण सिद्ध हुए ।

२५ "एकता" उपवास



सितम्बर १९२४ में गांधी जी ने हिन्दू-मुस्लिम तनाव दूर करने के लिए २१ दिन का उपवास किया। इससे उन्हें सभी व्यक्तियों को समान रूप से प्रेम करने की प्रेरणा मिली। इस उपवास से उपद्रव-ग्रस्त देश में शान्ति स्थापित हुई, सभी नेता आपस में मिल-जुल कर काम करने लगे, कुछ वैचारिक पवित्रता आई। साम्प्रदायिक मेलजोल बढ़ा।

२६ देशबंधु का निधन









१६२५ का वर्ष शोकजनक रहा। स्वराज्य आन्दोलन के अग्रणी नेता देशबंधु चित्तरंजन दास का जून के महीने में दार्जिलिंग में स्वर्गवास हो गया। यहीं गांधी जी ने उनके साथ कुछ दिन विताये थे जिससे इन दोनों महान नेताओं के सम्बन्ध घनिष्ठ हुए थे। महात्मा असहयोग का नारा लगाते थे और देशबंधु परिषद की बैठकों में सरकार से टक्कर लेते थे। देशबन्धु के निधन से शोक विह्वल होकर गांधी जी ने हृदयस्पर्शी श्रद्धांजलि लिखी।

२७ अनेक मोर्चों पर











१९२५-२८ के दौरान गांधी जी का नेतृत्व महत्वपूर्ण कसौटियों पर परखा गया—मन्दिर की सड़कों के इस्तेमाल का अधिकार हरिजनों को दिलाने के लिए हुआ वाइकोम सत्याग्रह और दूसरे, अखिल भारतीय चर्खा संघ की स्थापना। अन्य मोर्चों पर दूसरे लोग थे—लाजपत राय साइमन आयोग के बहिष्कार के समय शहीद हुए, सरदार पटेल बारडोली सत्याग्रह के कर्ता-धर्ता थे; संवैधानिक रिपोर्ट तैयार करने वाले मोतीलाल नेहरू थे; और जवाहरलाल थे जो कलकत्ता कांग्रेस में "पूर्ण स्वाधीनता" प्रस्ताव के कर्मठ योद्धा थे।

२८ कालचक्र







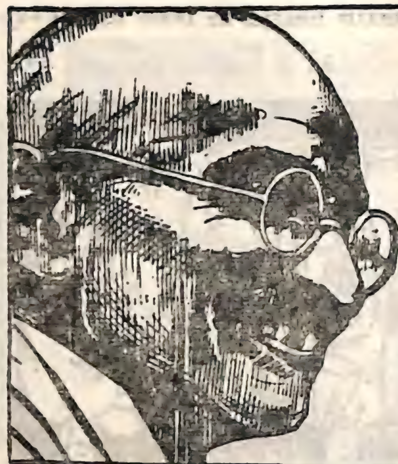


और इस प्रकार काल-चक्र चलता रहा। साइकिल का इस्तेमाल—मीटिंग में समय पर पहुंचने के लिए—दिखाता है कि गांधी जी क्या कुछ करने के लिए तैयार रहते थे। उनका चर्खा हमेशा उनके साथ रहता; जहां भी वे जाते, साथ जाता। यह चर्खा भारत के भाग्य निर्धारण का और दरिद्रनारायण से अभिन्नता का प्रतीक था।

२६ नमक सत्याग्रह









१६२६-३० का "कृपा वर्ष"। गांधी जी सत्ता के स्तूप पर हमला बोलने के लिए अनुकूल शक्तियों का संचय कर रहे थे। "नमक सत्याग्रह" गरीबों के भोजन पर टैक्स लगाने का प्रतिरोध मात्र न था अथवा केवल नमक कानूनों का उल्लंघन न था। गांधी जी की दृष्टि में यह "शक्ति के विरुद्ध औचित्य का युद्ध" था। दुनिया अचरज करती रही और "डांडी मार्च" इस अजूबी लड़ाई का "पहला बिगुल" बजा गया।

३० डांडी मार्च









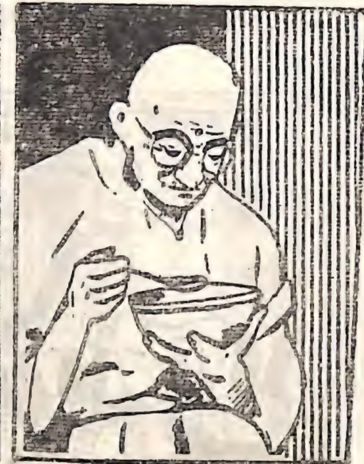
समुद्र तट तक के २०० मील लम्बे इस मार्च से १९१३ के दक्षिण अफ़्रीका के मार्च की याद ताज़ा हो जाती है जिसकी अगुवानी स्वयं गांधी जी ने की थी। सविनय अवज्ञा का आंदोलन आरम्भ करने से पहले उन्होंने वाइसराय इर्विन को "अल्टीमेटम" भेज दिया था। "घुटनों के बल बैठ कर" उन्होंने "रोटी मांगी थी और बदले में पत्थर मिला था।" ५ मई १९३० की रात को वे चोरों की तरह आये और उन्हें गिरफ़्तार करके ले गये।

३१ सुलह और रिहाई









सारे देश में आग फैली हुई थी। सत्याग्रह, धरना, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार, "टैक्स न दो" आन्दोलन जारी थे। लाखों जेलों में डाले गए, हजारों के हाथ-पैर बेकार हुए, सैकड़ों लाठी चार्जों और गोलियों के शिकार हुए। सप्रू और जयकर ने सुलह कराई। २५ जनवरी १९३१ को गांधी जी जेल से छोड़ दिए गए। बम्बई में विश्राम करते हुए उन्होंने सहयोगियों से परामर्श किया। वे शांति चाहते थे लेकिन सम्मानजनक।

३२ नेहरू परिवार









मोतीलालजी और जवाहरलाल ज्यादातर गांधीजी के प्रभाव में आने की वजह से राजनीति के अखाड़े में उतरे थे और प्रमुख नेता बने थे। इलाहाबाद में वे अध्यक्ष बने थे और टंडन, कृपलानी, मालवीय सरीखे नेताओं की सभाओं में उन्होंने भाषण दिए थे। फरवरी १९३१में मोतीलालजी की मृत्यु हो जाने पर गांधीजी स्वयं को "अपाहिज" मानने लगे। बोले, "यह नुकसान कभी पूरा न हो पाएगा।" लेकिन जवाहरलाल अच्छे उत्तराधिकारी सिद्ध हुए।

३३ कराची आदेश

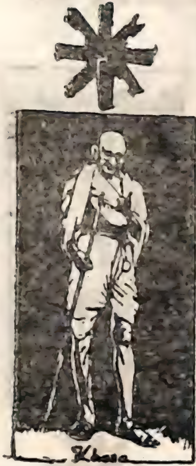






मार्च में कराची कांग्रेस ने जवाहरलाल द्वारा प्रस्तावित और बादशाह खान द्वारा समर्थित गांधी-इर्विन समझौते का अनुमोदन करने वाले प्रस्ताव को अपनी स्वीकृति दे दी। उसने "पूर्ण स्वराज" का लक्ष्य दोहराया और गांधी जी को लन्दन के दूसरे गोल मेज़ सम्मेलन में प्रतिनिधित्व करने का अधिकार दिया। कांग्रेस ने देशहित में बलिदान हुए भगतसिंह तथा उनके सहयोगियों की भी सराहना की।

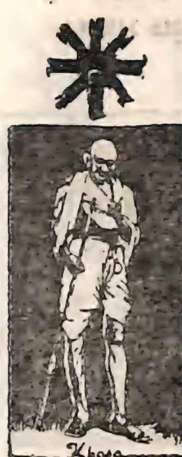
३४ गोल मेज सम्मेलन का रास्ता खुला







सरकार ने गांधी – इर्विन समझौते का पालन केवल आंशिक रूप में देर लगा कर किया। सरहदी प्रांत में दमन चला, उत्तर प्रदेश में तनाव फैला। गांधी जी ने समझौते के अक्षरशः पालन किए जाने की मांग की, शिमला जा कर वाइसराय विलिंगडन को सरकारी उल्लंघनों से अवगत कराया। अगस्त में दूसरा समझौता हो जाने पर गांधी जी को गोल मेज सम्मेलन का रास्ता खुला दिखाई दिया और २९ अगस्त को बम्बई बन्दरगाह पर देश ने उन्हें भावभीनी विदाई दी।









मालवीय, सरोजिनी नायडू, महादेव और प्यारेलाल—उनके सचिव, मीराबेन व पुत्र देवदास—गांधी जी के साथ गये । जहाज 'राजपूताना' पर सवार गांधी जी प्रसन्न रहते, अन्य यात्रियों से बातचीत करते, उन्हें मित्र बनाते, बच्चों के साथ खेलते, प्रार्थना सभाएं करते, भाषण देते, जहाज के कल-पुर्जे देखते-परखते, डेक पर धूप में लेटे रहते, और ज्यादातर चर्खा चलाते रहते ।

३६ सर्वत्र मित्र ही मित्र







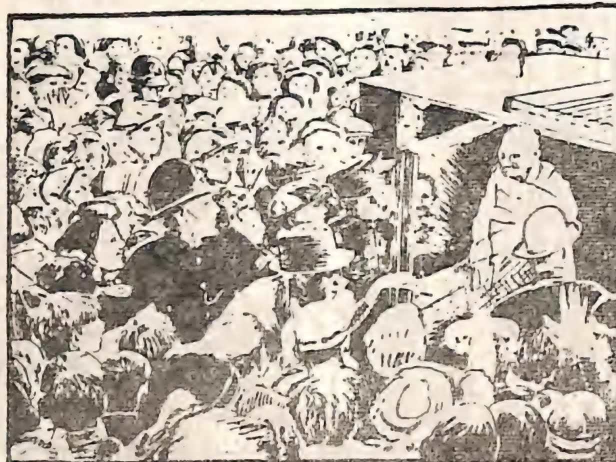


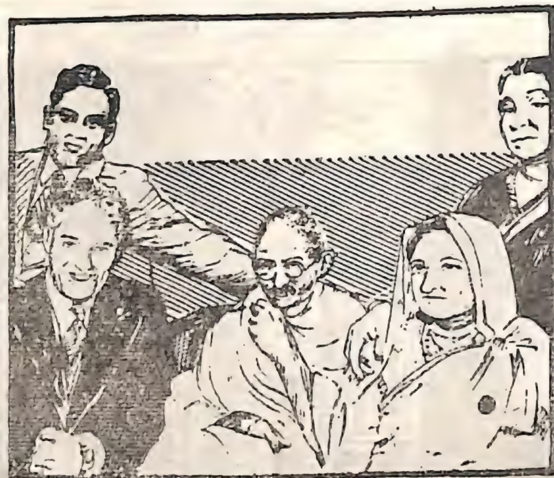
स्वेज और पोर्ट सईद में मिश्र की शुभकामनाएं मिलीं, भारतीय प्रतिनिधिमण्डलों से मुलाकात हुई, पत्रकारों से बातचीत हुई। मर्साइल्ज में यूरोपीय मित्रों जैसे दीनबन्धु सी. एफ. एन्ड्र्यूज से। १२ सितम्बर को लन्दन पहुँचने पर गांधी जी अपने दल के साथ गरीब खनिकों और फैक्टरी मजदूरों की बस्ती इस्ट एंड में गए। यहीं, किंग्सले हॉल में, इन्हीं लोगों के बीच, अंग्रेज मेहमानवाज मुरियल लेस्टर के घर उन्होंने डेरा डाला।

३७ जनता से साक्षात्कार



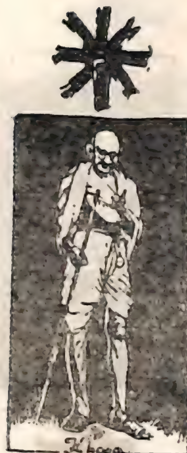






स्कॉटलैण्ड यार्ड ने गांधी जी ही सुरक्षा के लिए दो बड़े जासूस नियुक्त किए थे मगर उन्हें एक की भी जरूरत न थी। महात्मा जहाँ भी जाते, स्त्रियाँ और बच्चे, सीधे सादे व कुलीन वर्गों के लोग उन्हें घेरे रहते। प्रसिद्ध हंसोड़िये चार्ल्स चैपलिन भी उनसे मिलने आये और इतिहास साक्षी है कि उन्हें गांधी जी ने ही हँसाया।

३८ नेताओं से बातचीत







गांधी जी की अनेक बुद्धिजीवियों, समाज सेवकों और छात्रों से बातचीत हुई। कई सभाओं में भाषण दिये। खनिकों के मकान देखे। ईस्ट एंड के बच्चों ने मोमबत्तियों और केक से उनका जन्म दिवस मनाया। सभी विचारधाराओं के सामाजिक, राजनैतिक व धार्मिक नेताओं ने उनसे बातचीत की जैसे कैंटरबरी के "रेड डीन", डॉ० ह्यूलैट जॉनसन।

३६ लंकाशायर में स्वागत

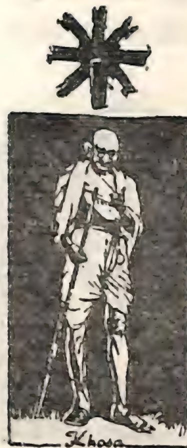






गांधी जी लंकाशायर गये। स्वदेश में विदेशी कपड़े के बहिष्कार की वजह से यहाँ की सूती मिलों में करघे बन्द थे, चिमनियों में धुंआ नहीं था, पुरुष बेरोजगार थे, स्त्रियां दुखी थीं। मगर जब उन्होंने भारतीय किसानों के दुखदर्द की कहानियां सुनाई तो लोग असलियत समझ गये, खुशी भी जाहिर की। फिर फुरसत मिलने पर वे आर्ईलिगटन का डेरी पशु मेला देखने गये और पुरस्कार विजेता बकरियों को शाबाशी दी।

४० निरर्थक खोज



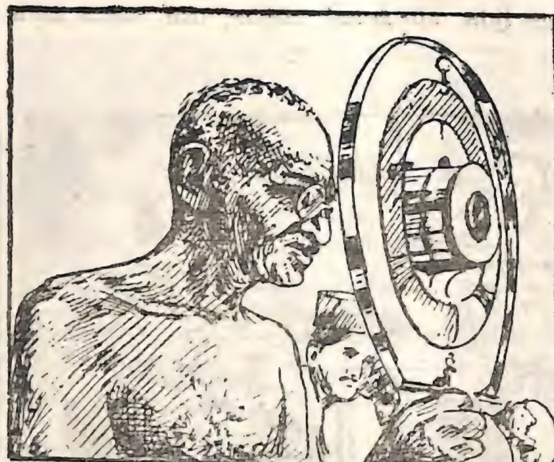




सामाजिक कार्यकलापों में व्यस्त रहने के बावजूद गांधी जी अपना लक्ष्य नहीं भूले—गोल मेज सम्मेलन में भाग लेना। उन्होंने ब्रिटिश शासकों से हृदयस्पर्शी अपील की कि वे भारत को आजादी दे दें और वैर पैदा न करें...मगर उन लोगों ने उनकी एक न सुनी और गांधी जी खाली हाथ वापस लौट पड़े। रास्ते में स्विटजरलैण्ड के विलेनुएव में फ्रांसीसी विद्वान, रोमा रोलां, से मुलाकात हुई।

४१ नई कठिनाई



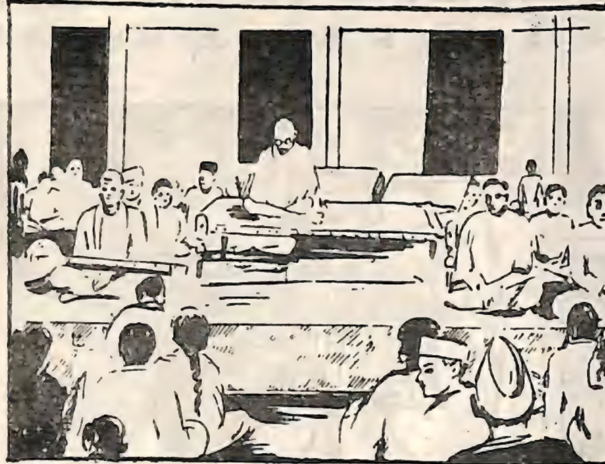




१९३२ का वर्ष। भारत लौटने पर गांधी जी ने देखा कि विलिंगडन के आदेश के मुताबिक हर कहीं अत्याचार का बोलबाला था। उनके निकट सहयोगी गिरफ्तार किये जा चुके थे। शीघ्र ही उन्हें भी यरवदा जेल में डाल दिया गया। सितम्बर में आम के पेड़ की छाया में उन्होंने साम्प्रदायिक कानून के विरुद्ध अनशन किया जिससे हिन्दू जनता की चेतना जगी और यरवदा समझौता हुआ। मई १९३३ में हरिजन कल्याण के लिए उन्होंने दूसरा अनशन किया जिसके बीच में उन्हें जेल से रिहा कर दिया गया।

४२ साबरमती से सेगांव







जुलाई १९३३ में अंतिम प्रार्थना सभा विसर्जित होने के बाद गांधी जी ने साबरमती आश्रम तोड़ दिया। सितम्बर में वे वर्धा के सत्याग्रह आश्रम में जा बसे। फिर उनकी प्रातःकालीन सैर वर्धा के मैदानों में होने लगी। नवम्बर में उन्होंने अस्पर्श्यता निवारण के हित में सर्वसाधारण को जागरूक बनाने के लिए अपनी देशव्यापी हरिजन यात्रा नागपुर से शुरू की।

४३ अथक तीर्थयात्रा









गांधी जी की जीवनी उनकी इस अथक तीर्थयात्रा की कहानी है कि उन्होंने देश के प्रत्येक भाग में घूम-घाम कर पीड़ित व दलित जनता के उद्धार की मार्मिक अपील की। १९३४ की यात्रा "अछूतों" के उद्धार के लिए हुई थी जिन्हें वे "हरिजन" या ईश्वर पुत्र कहा करते थे।

४४ छुआछूत का कलंक






गांधी जी ने सभाएं कीं, हर कहीं जाकर कहा कि छुआछूत एक कलंक है और हिन्दुओं को चाहिए कि उसे धो दें। जनवरी १९३४ में बिहार में भूचाल से तबाही हुई। गांधी जी राहत कार्यों का संगठन करने के लिए तुरन्त वहां पहुँच गये लेकिन उनका यह विचार बना रहा कि हिन्दुओं के पापों के बदले ईश्वर ने यह दण्ड दिया है।

४५ कांग्रेस से अवकाश







"अक्टूबर १९३४ में कांग्रेस के बम्बई अधिवेशन में गांधी जी ने कांग्रेस से अपना नाता तोड़ लिया। लक्ष्य के विषय पर उनका कांग्रेस से मतभेद था। उनके लिए पूर्ण स्वराज्य का अर्थ मात्र स्वाधीनता से कहीं ज्यादा था, साधनों का भी साध्यों के समान ही महत्व था। कांग्रेस के अधिवेशन से अखिल भारतीय ग्रामोद्योग संघ की स्थापना का रास्ता-साफ़ हो गया।

४६ रचनात्मक कार्य



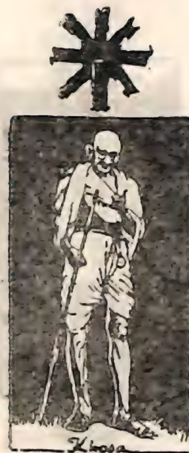




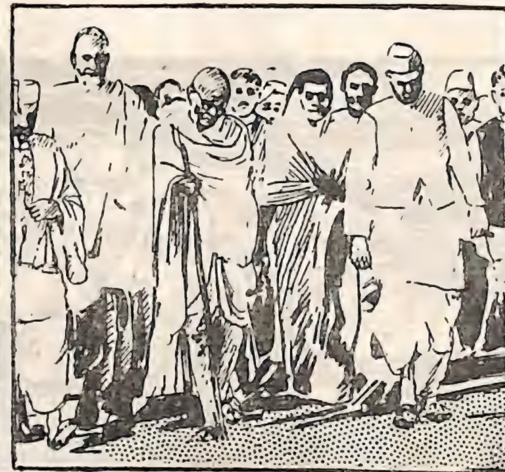


ग्राम कार्य, स्वदेशी ही गांधी जी का अधिकांश समय ले जाते । जमनालाल बजाज, जे. सी. कुमारप्पा, आदि कुछ व्यक्ति इन महत कार्यों में सदा उनके साथ रहते । उन्होंने देश के विभिन्न भागों से आये रचनात्मक कार्यकर्त्ताओं के सामने भाषण दिये, और खाद जैसी प्राथमिक चीजों के बनाने में जो ग्रामों के पुनर्निर्माण के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं; गहरी रुचि दिखाई ।

४७ कार्य और प्रार्थना







हरिजनोद्धार गांधी जी के विचारों पर छाया रहता। उन्होंने ठक्कर बापा सरीखे सिद्ध समाज सेवकों का परामर्श लिया। साथ ही उन्होंने प्रार्थना-कार्य को पूरी तरह विचार और कर्म में ढाल लिया, विशालतम प्रार्थना सभाएं भंगी या हरिजन बस्तियों में ही कीं। इस बीच सन् १९३५ का गवर्नमेंट आफ़ इण्डिया एक्ट ब्रिटिश संसद में पास हो रहा था।

४८ प्लेग से राहत







गांधी जी चाहे दक्षिण अफ्रीका में रहे या भारत में, प्लेग-पीड़ितों के लिए राहत कार्यों की व्यवस्था करने में उनकी रुचि बनी रही। १६३५ में बोरसद तथा गुजरात के अन्य गांवों में प्लेग की महामारी फैली। मोरारजी देसाई, सरदार पटेल, व अन्य विश्वस्त सहयोगियों के साथ इन क्षेत्रों में घूम-घूमकर गांधी जी ने लोगों को साफ़ रहने की सलाह दी और चूहों से छुटकारा पाने के तरीके बताये।



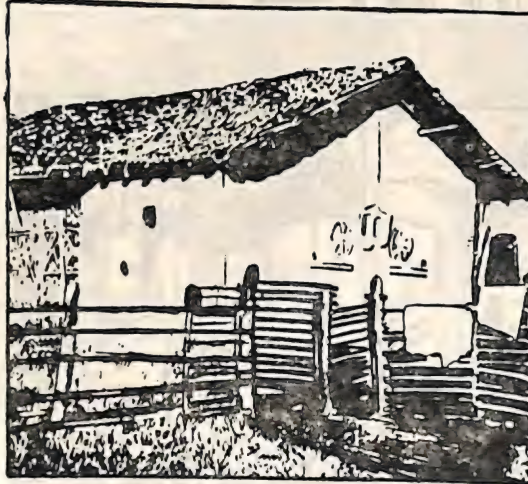


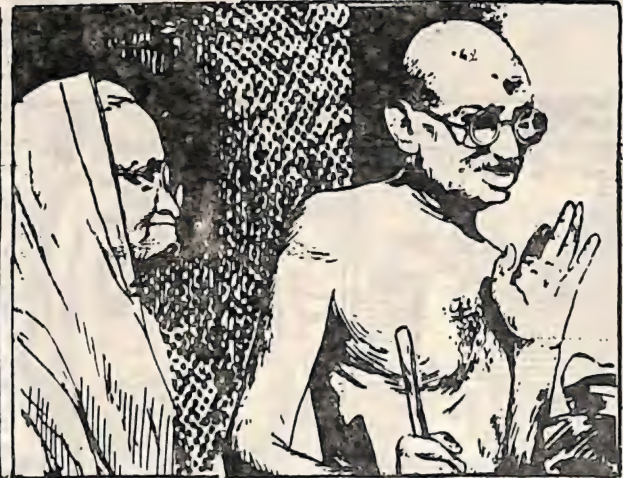


ग्रामीण भारत के पुनरुत्थान के श्रेष्ठ कार्यक्रम में गांधी जी को नेहरू और आज़ाद जैसे विद्वानों का समर्थन मिला। १९३६ में नागपुर में साहित्यकार सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए उन्होंने साहित्य की उपयोगिता की भूरि-भूरि प्रशंसा की लेकिन खुद अपनी मिसाल देते हुए शारीरिक श्रम के महत्व पर भी जोर दिया।

५० सेगांव सेवाकार्यों का प्रतीक







वर्धा के निकट जिस सेगांव नामक गांव में गांधी जी जा बसे थे, वही बाद में सेवाग्राम बना। मिट्टी की उनकी सीधी-सादी झोंपड़ी में बड़े और छोटे, सभी प्रकार के लोग पारस्परिक, सामाजिक, राष्ट्रीय समस्याओं के संदर्भ में मार्गदर्शन पाने के लिए आते। उनकी महती उपस्थिति वरदान सिद्ध होती थी।

५१ विद्या और प्रेम के मन्दिर







अक्तूबर १९३६ में गांधी जी बनारस गये लेकिन उनकी यह तीर्थयात्रा दूसरी तरह की थी। वे हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्थापक मदन मोहन मालवीय से मिले जो वास्तव में विद्या-मन्दिर थे। लेकिन गांधी जी ने उस नगर में भारत माता के मन्दिर का उद्घाटन किया जो वास्तव में प्रेम का मन्दिर है। अपनी आस्था के प्रतीक स्वरूप उन्होंने भविष्य के लिए आम का पेड़ बोया।

५२ भारत एक गांव है





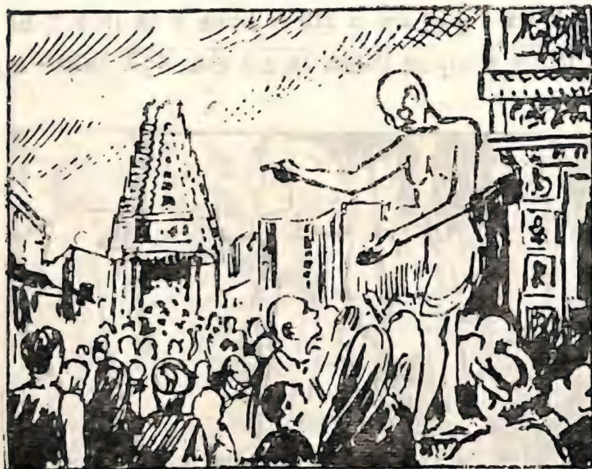


गांधी जी के लिए ग्रामीण भारत ही वास्तविक भारत था। १९३६ के वर्ष की विशेषता थी—ग्रामीण वातावरण में हुआ फ़ैज़पुर अधिवेशन जिससे भविष्य का स्वरूप तय होना शुरू हुआ। शांतिनिकेतन के नंदलाल बोस ने कठिन परिश्रम करके ग्रामीण जीवन की झांकी प्रस्तुत की जिसे देखकर गांधी जी अत्यंत प्रभावित हुए। उन्होंने लिखा "यह झलक देखने के बाद दिल पूरी तस्वीर देखने के लिए मचलने लगता है"।

५३ सुखद घोषणा









१९३७ का वर्ष गांधी जी द्वारा द्वितीय तीर्थयात्रा आरंभ करने के साथ शुरू हुआ। इस बार वे दक्षिण की ओर गये। त्रावणकोर की मन्दिर-घोषणा से आनन्द पद्मनाभ मन्दिर के द्वार हरिजनों के लिए खुल गये। गांधीं जी ने इस घोषणा का "हरि कृपा" कह कर स्वागत किया। कन्याकुमारी में, "जहाँ तीन ओर के पानी का संगम है और इस तरह संसार भर का अद्वितीय दृश्य उपस्थित होता है," । उन्होंने जल-तर्पण किया।

५४ सत्तारूढ़ कांग्रेस







सात प्रांतों में कांग्रेस सत्तारूढ़ हुई; उसने संघ की प्रणाली अस्वीकार कर दी, एक संवैधानिक सभा के गठन की मांग की। "हरिजन" नामक पत्र के माध्यम से गांधी जी ने नवयुग के बारे में लेख लिखे। अक्टूबर १९३७ में उन्होंने अपनी नवीन शिक्षा पद्धति पर विस्तार पूर्वक विचार प्रस्तुत किये। कांग्रेस महासमिति के कलकत्ता अधिवेशन के दौरान सुभाष बोस के साथ ठहर कर उन्होंने राजनीतिक बंदियों की रिहाई की मांग की।

५५ आराम और मनोरंजन







स्वास्थ्य बिगड़ने पर गांधी जी जुहू तट पर आराम करने के लिए मजबूर हो गये। लेकिन जनवरी १९३८ में सेवाग्राम वापस लौट आने पर भी राजनीति ने उनका पीछा नहीं छोड़ा। उत्तर प्रदेश और बिहार के कांग्रेसी मंत्रिमंडलों ने इस्तीफे दे दिये। हरिपुरा कांग्रेस में इस पर विचार हुआ। बड़ी व्यग्रता के साथ उन्होंने ग्रामीण दस्तकारी की नुमाइश देखी।

५६ अनेक मोर्चों पर







हरिपुरा कांग्रेस में अध्यक्ष सुभाष बोस ने अपील की कि स्वाधीनता संग्राम को कटुता, घृणा से दूर रखने के लिए गांधी जी को अकेला छोड़ दिया जाये । गांधी जी राजनैतिक बंदियों की रिहाई के लिए भरसक कोशिश करते रहे । साम्प्रदायिक एकता बनाये रखने के लिए जिन्ना से मिले, सरहदी इलाके का दौरा करने गये जहां जंगी पठानों को खुदाई खिदमतगार बनाने के काम में बादशाह खां ने चमत्कार कर दिखाया था ।

५७ सरहदी इलाके का दौरा



सरहदी प्रांत में गांधी जी को प्रार्थना व अन्य सभाओं में पूरा अनुशासन तथा नियम परायणता देखने को मिली। इससे उनका अहिंसा में विश्वास और दृढ़ हुआ जिसकी उन्होंने खुदाई खिदमतगरों से बार-बार चर्चा की। बादशाह खाँ का प्रभाव सभी ओर स्पष्ट दिखाई दिया, खान बादशाह को उन्होंने "ईश्वर प्रेमी" कह कर श्रद्धांजलियां दीं। दोनों में अटूट प्रेम पैदा हुआ।

५८ कठिन परीक्षा









१९३९ में गांधी जी के सामने कठिनाई आई। उनके अपने जन्म-स्थान, रियासत राजकोट के शासक ने जनता को संवैधनिक अधिकार प्रदान करने का अपना आश्वासन पूरा नहीं किया। वार्ता विफल होने के बाद गांधी जी ने अनशन शुरू कर दिया और उसे तब ही तोड़ा जब उनके अनशन के देशव्यापी प्रभाव से घबरा कर वाइसराय ने हस्तक्षेप किया और भारत के मुख्य न्यायाधीश को इस मामले का निर्णय करने के लिए नियुक्त किया।

५६ अन्दर और बाहर











त्रिपुरी कांग्रेस से पहले। गांधी जी दिल्ली में कार्यसमिति के सदस्यों के साथ, विशेषकर अपने विश्वस्त सहयोगी जवाहरलाल के साथ, अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं पर विचार-विमर्श करने में व्यस्त थे। कांग्रेसी अधिवेशन में शामिल होने के लिए आया हुआ मिस्री वफ़्द प्रतिनिधिमण्डल गांधी जी से मिलने आया, उन्हें भाइयों जैसी सहानुभूति का आश्वासन दिया, स्वाधीनता संग्राम में सफलता की कामनाएं दीं।

६० "त्रिपुरी में तैयारी : राजकोट में खटपट"











मार्च १९३७ में त्रिपुरी में कांग्रेस का अधिवेशन शुरू हुआ बिना गांधी जी के। गांधी जी उन दिनों अनशन के बाद स्वास्थ्य लाभ कर रहे थे। अप्रैल में रजवाड़ों की समस्या के सिलसिले मेंउन्होंने कई बार वाइसराय से मुलाकात की। ४ अप्रैल को राजकोट कानून जारी हुआ। वाइसराय ने गांधी जी को पत्र लिखकर इस कानून के पूरी तरह लागू करने का वचन दिया। मगर गांधी जी की आशंका बनी रही।

६१ विपत्ति आयेगी



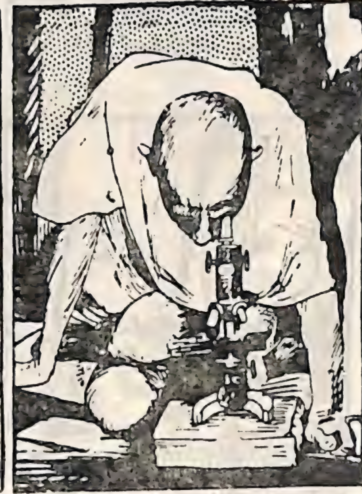
राजकोट कानून में गांधी जी को अत्याचार की झलक दिखाई दी और उन्होंने उसे मानने से इंकार कर दिया। राजकोट ने उनका यौवन छीना था। बम्बई में महिला स्नातकों के उपाधि वितरण के अवसर पर उनका भाषण तूफान के फट पड़ने से पहले की नीरव शांति का द्योतक है। अगस्त १९३९ में, युद्ध के मंडराते हुए बादलों को देखकर कार्यसमिति ने इस साम्राज्यवादी युद्ध के प्रति अपने विरोध की घोषणा कर दी।

६२ निस्सीम, निर्बंध दया



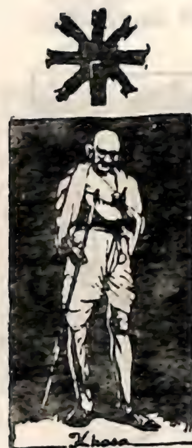






सभी सजीव प्राणियों के प्रति दया प्रदर्शित करना गांधी जी की चारित्रिक विशेषता थी, चाहे वह नवजात बकरी हो या सेवाग्राम का कोढ़-पीड़ित शास्त्री। एक के साथ वे घंटों खेलते और दूसरे की सेवा-परिचर्या करते। कोढ़ के प्रति विवेकसंगत व्यवहार करने को आतुर गांधी जी ने इस रोग के मूल कारणों का गहरा अध्ययन किया।

६३ कमला नेहरु अस्पताल

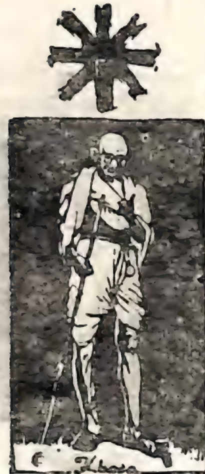








गांधी जी अस्पतालों की संख्या बढ़ाने को आधुनिक सभ्यता की बुराई मानते थे। लेकिन बीमारियों का इलाज जरूरी है। इसीलिए इलाहाबाद में एक अस्पताल की उन्होंने सहर्ष नींव डाली जिस का नाम नेहरु की प्रिय पत्नी, कमला के नाम पर रखा गया था।







१९४० का वर्ष। स्वाधीनता दिवस। गांधी जी ने इसका महत्व समझाया, छात्रों की भूमिका पर प्रकाश डाला। वाइसराय के साथ वार्ता विफल हो जाने के बाद फरवरी में, गांधी जी को ब्रिटेन और राष्ट्रवादी भारत के बीच की खाई चौड़ी होती दिखाई दी। शांति निकेतन के दर्शन करते हुए उन्होंने टैगोर की सच्ची अन्तर्राष्ट्रीय रचना, विश्व भारती, को "उनके (टैगोर के) जीवन के कोष का वाहन" कह कर भूरि-भूरि प्रशंसा की और अपना समर्थन देने का संकल्प किया।

६५ वैयक्तिक सत्याग्रह



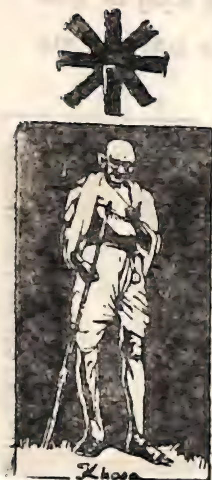


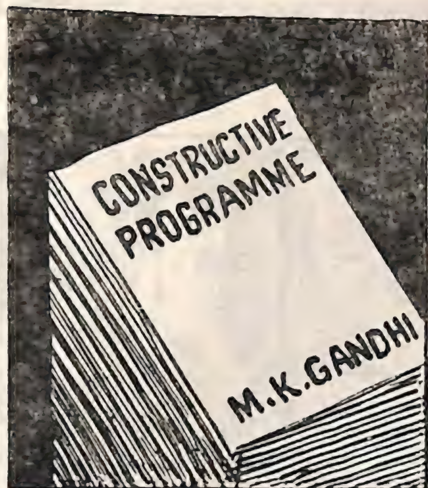




रामगढ़ कांग्रेस में गांधी जी ने प्रत्येक कांग्रेस समिति को सत्याग्रह समिति का नाम दिया। युद्ध में कई मोर्चों पर ब्रिटेन की हार हुई। गांधी जी ब्रिटेन के सद्भाव की सत्यासत्यता परखने के लिए युद्ध के विरुद्ध ग्रौर युद्ध में शामिल होने के विरुद्ध विचाराभिव्यक्ति का ग्रधिकार मांगा। ग्रक्टूबर में गांधी जी का ग्राशीर्वाद ले कर विनोबा ने पहल की, सत्याग्रह शुरू हुग्रा, उनकी गिरफ्तारी के बाद नेतृत्व जवाहरलाल ने सम्हाला। शीघ्र ही हजारों की तादाद में लोग जेलों में डाल दिये गये।

रचनात्मक कार्यक्रम







दिसम्बर १९४० में गांधी जी ने २५ पृष्ठों वाली एक पुस्तिका—"रचनात्मक कार्यक्रम : अर्थ और महत्व"—प्रकाशित की। इसका उद्देश्य अहिंसक उपायों से प्राप्त होने वाली स्वाधीनता पर प्रकाश डालना था। यह ऐसी सुधारवादी पुस्तिका थी जिसमें देश के समस्त सामाजिक व आर्थिक स्वरूपों पर पर्याप्त ध्यान दिया गया था। बारदोली में हुई कार्य समिति की बैठक ने गांधी जी को नेतृत्व के पद भार से मुक्त कर दिया ताकि वे रचनात्मक तथा विरोधी कार्यों को पूरा समय दे सकें।

६७ अंतःकरण की पुकार







सविनय अवज्ञा आन्दोलन संगठित व प्रचारित करते हुए निलम्बित हो जाने के बाद, हरिजन प्रकाशन माला के साप्ताहिक पत्रों का प्रकाशन फिर शुरू हो गया। गांधी जी ने इन पत्रों में युद्ध-जनित समस्याओं पर विचार करना आरम्भ किया। "मूल्य नियंत्रण," "शान्त रहिए," "देश छोड़ना क्यों जरूरी," "तप्त धरती," जैसे विषयों पर हर सप्ताह लेख छपते।

६८ अगली तारीख वाला चैक

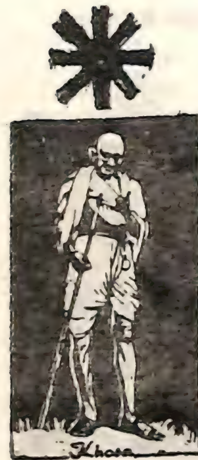






मार्च १९४२ में क्रिप्स यह प्रस्ताव दोहराने भारत आये कि युद्ध खत्म होने के बाद संविधान बनाने वाली एक समिति बना दी जायेगी। लेकिन तब तक, जापान द्वारा युद्ध में शामिल हो जाने से एशिया को जो खतरा पैदा हो गया है, उसका सामना करने के लिए भारत युद्ध-सम्बन्धी प्रभावकारी कदम उठाए। गांधी जी ने इस प्रस्ताव को अगली तारीख वाला चैक बताया; ब्रिटिश शासकों से अपील की कि वे एशिया व अफ्रीका के प्रत्येक भाग से, कम से कम भारत से हट जाएं। दूसरे शब्दों में : 'भारत छोड़ो"।

६९ "भारत छोड़ो"









गांधी जी ने च्यांग काई शेक, राष्ट्रपति रूजवेल्ट से अपील की कि वे "भारत छोड़ो" मांग के पीछे की असलियत समझें। अगस्त के पहले हफ्ते में बम्बई महासमिति की बैठक में एतिहासिक "भारत छोड़ो" प्रस्ताव रखा। "भारत की स्वाधीनता सभी एशियाई राष्ट्रों की स्वाधीनता की प्रतीक और उनमें अग्रणी होनी चाहिए"। पटेल, आज़ाद, नेहरू ने यथाशक्ति समर्थन किया। गांधी जी के "करो या मरो" के आह्वान का सरकार ने यह बदला दिया कि क्रूर हिंसा का नंगा नाच हुआ, नेता और अनुयायी दोनों गिरफ्तार कर लिये गये।





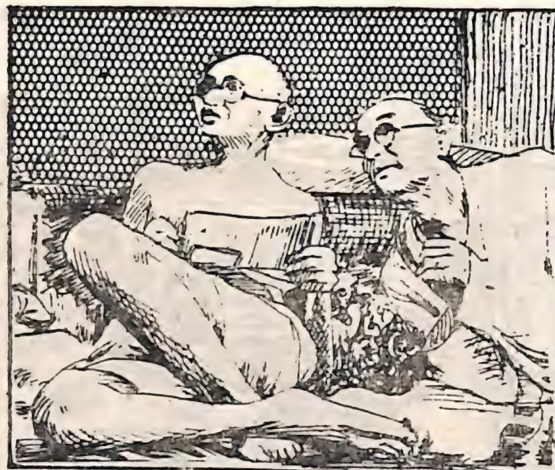


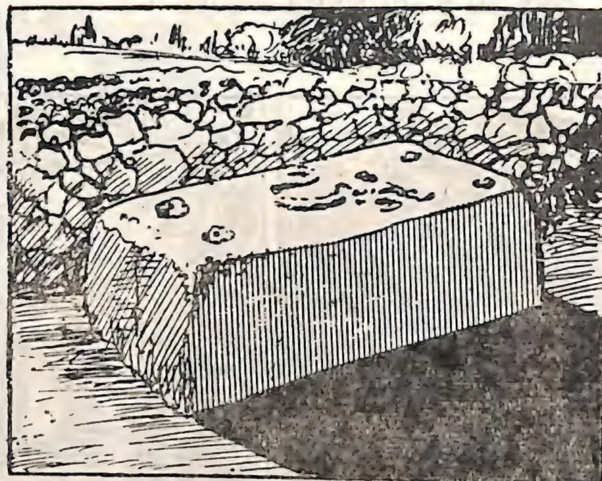
नेताओं से वंचित हो जाने पर, जिन्हें सरकार ने किसी अज्ञात स्थान में छुपा दिया था, भारतीय जनता ने ब्रिटिश नौकरशाही के अत्याचारों का जवाब उनसे असहयोग करके और रेलगाड़ियों में तथा संचार साधनों में तोड़-फोड़ करके दिया ... । जनता का ख़याल था कि इसकी अनुमति ऊपर से मिली है जिसमें ग़लती से गांधी जी का नाम भी जुड़ गया था। सरकार ने क्रूरता से इन्हें दबाया...... ।

७१ "करो या मरो"



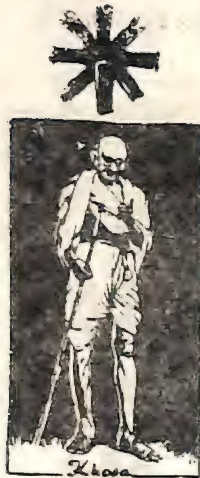






८ अगस्त १९४२ को बम्बई में महासमिति के एतिहासिक "भारत छोड़ो" अधिवेशन में गांधी जी ने देश से "करो या मरो" के लिए तैयार होने को कह दिया। सरकार ने दमन चक्र चलाया, गांधी जी तथा अन्य नेताओं को भोर में बंदी बनाया, उन्हें अज्ञात स्थान में गुपचुप ले जाया गया। कुछ दिनों बाद गांधी जी के सचिव महादेव देसाई की आगा खां महल में मृत्यु हो गई जिन्हें वे पुत्र से भी ज्यादा चाहते थे।

७२ कस्तूरबा का स्वर्गवास







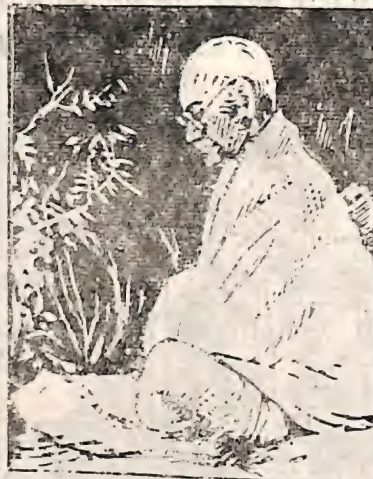


आगा खां महल को जेल से भी ज्यादा महत्वपूर्ण सिद्ध होना था। उसे तीर्थ बनना था। इसी जगह महाशिव रात्रि के दिन अर्थात २२ फ़रवरी १९४४ को कस्तूरबा स्वर्ग सिधारीं। उन्होंने भारतीय स्त्री के पवित्र आदर्श को आत्मसात किया था—सीधी-सादी, आत्म निग्रही, पति-भक्त। कस्तूरबा सुख-दुख में सदा साथ रही थीं, जीवन संगिनी की मृत्यु से गांधी जी को गहरा आघात लगा।

७३ कठिनाई से मुक्ति



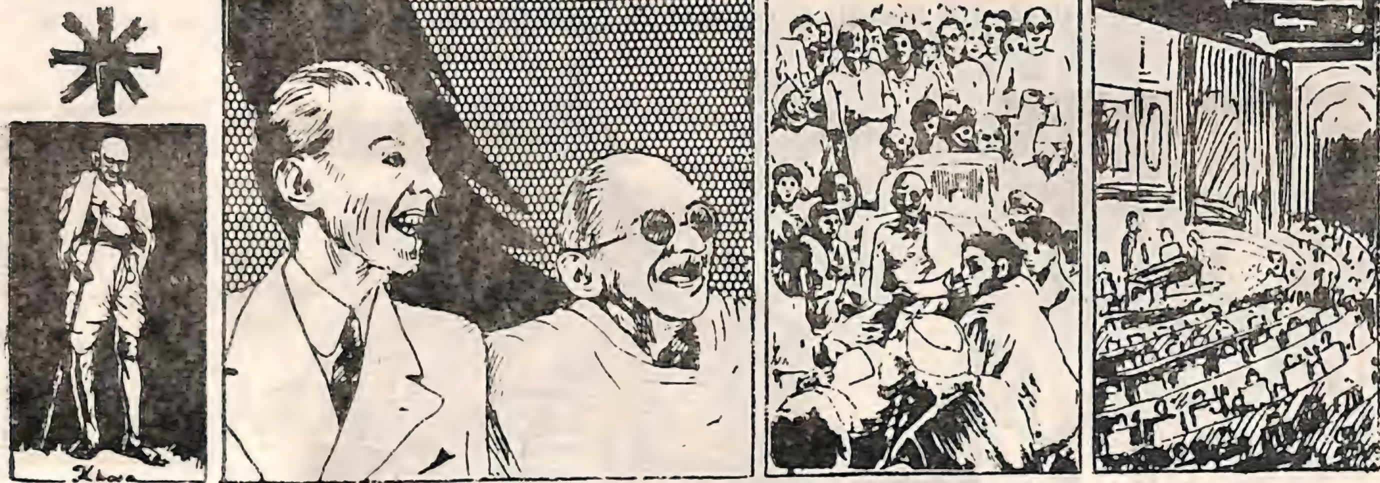






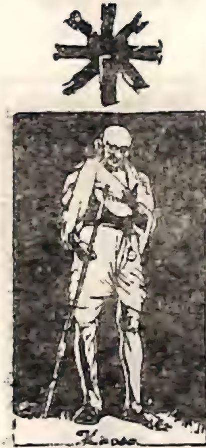
इस बार जेल का जीवन बहुत कष्टप्रद रहा। अनेक पत्र लिखकर गांधी जी ने नौकरशाही द्वारा उन पर लगाए गये देश में अशाँति फैलाने के आरोपों के उत्तर दिए। गांधी जी ने बदले में नौकरशाही पर जल्दी बरतने और बर्बर हिंसा फैलाने के आरोप लगाये, २१ दिवसीय उपवास का कष्ट सहा। रिहा होने पर बिगड़ी तन्दुरुस्ती सम्हालने के लिए उन्हें जुहू तट जाना पड़ा, प्रार्थना सभाओं से उन्हें आत्मिक शुद्धि मिली।

७४ शांति वार्ता



सितम्बर १९४४ में साम्प्रदायिक भेदभाव दूर करने के लिए एक और भीम प्रयत्न। गांधी जी ने जिन्ना से बातचीत की, नतीजा कुछ न निकला। कृतज्ञ राष्ट्र ने, कस्तूरबा का सम्मान करने की खातिर, उन्हें नारी कल्याण कार्यों के लिए एक करोड़ रुपयों की भेंट दी। जब सेनफ्रांसिस्को में संयुक्त राष्ट्र का शांति सम्मेलन शुरू हुआ तो गांधी जी ने कहा कि विश्व की स्थायी शांति के लिए पहली शर्त्त यह है कि भारत को आजादी दी जाए।

७५ बाधाए







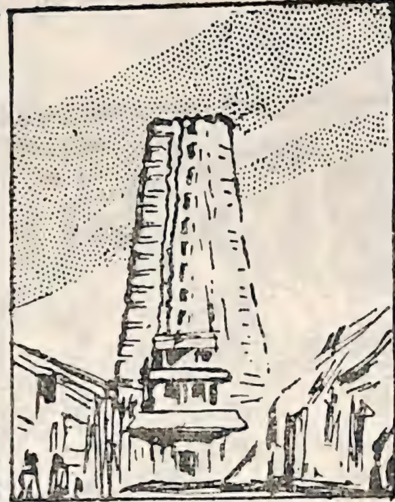
जून १९४५ में गांधी जी कार्यसमिति की बैठक में शामिल हुए जिसने शिमला सम्मेलन में भाग लेने की अनुमति कांग्रेस को दे दी। लेकिन सम्मेलन टूट गया। उन्होंने बंगाल का दौरा किया, दीनबन्धु स्मारक अस्पताल की नींव रखने के लिए शांति निकेतन गये। मृत्यु-शय्या पर पड़े एण्ड्रयूज ने गांधी जी से कहा : "मोहन, मुझे स्वराज आता हुआ दीख रहा है।"

७६ रचनात्मक मिशन



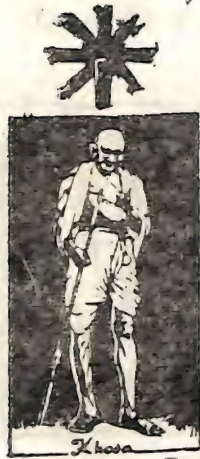






दक्षिण भारत की यात्रा करते हुए गांधी जी का लक्ष्य राष्ट्र भाषा, हिन्दुस्तानी का प्रचार करना रहा। उन्होंने हिंदी प्रचार सभा के उपाधि-वितरण समारोह की अध्यक्षता की, समाज सेवियों की सभा में रचनात्मक कार्यक्रम का महत्व समझाया, बेकारी आदि तकलीफ़ें दूर करने के काम में चर्खे की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। मीनाक्षी मन्दिर के दर्शन करते हुए उन्होंने अस्पर्श्यता निवारण के महत्व पर बल दिया।

७७ सत्ता का हस्तांतरण









देश बंग-दुर्भिक्ष के दौर से गुजर चुका था। ब्रिटेन की मज़दूर सरकार ने सत्ता हस्तांतरण के विषय पर बातचीत करने के लिए एक मिशन भारत भेजा। वार्ताएं चलीं, सम्मेलन हुए लेकिन समस्या न सुलझी। अंत में कैबिनेट मिशन ने स्वयं अपनी योजना की घोषणा कर दी, सत्ता के हस्तांतरण के लिए एक तारीख निश्चित कर दी। कांग्रेस ने अस्थायी सरकार का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया, मुस्लिम लीग इसमें शामिल न हुई।

७८ शांति मिशन



मुस्लिम लीग ने "सीधी कार्रवाई" की घोषणा कर दी, कलकत्ता में साम्प्रदायिक हिंसा के फलस्वरूप खून की नदियां बहीं। नोआखली में भी यह बीमारी फैली। कलकत्ता में गांधी जी के अनशन ने शांति स्थापित करने में चमत्कार कर दिखाया; इसके बाद वे सद्भाव स्थापित करने के लिए, हर एक आंख के आंसू पोंछने के लिए नोआखली गये। शांति मिशन के दौरान वे एक गांव से दूसरे गांव में घूमते रहे।

७९ एकाकी तीर्थ यात्री



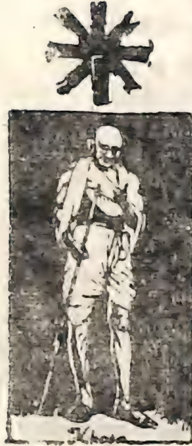






नोआखली में इस एकाकी शांतिसेवी का सबसे शानदार समय बीता। इसी दौरान सभी किस्म की राजनीति व मजहबों से ऊपर बढ़-कर मानवप्रेमी की हैसियत से उनका व्यक्तित्व निखार पर आया। इस समय अहिंसा का उनका सिद्धांत सबसे कड़े इम्तहान से गुज़र रहा था। इस सिद्धान्त को लागू करने में उन्होंने अपनी भूल स्वीकार की; रोशनी की तलाश। इन उद्विग्न क्षणों में नेहरू उनके पास पहुँचे मगर वे उन्हें अपने इस निश्चय से जरा भी न डिगा सके कि नोआखली में ही या तो इस सिद्धांत को सत्य सिद्ध "करूँगा या मर जाऊँगा।"

८० अंधकारमय भविष्य







नोआखली की एतिहासिक यात्रा के बाद बिहार से पुकार आ पहुँची। काम वहां भी वही था, जनक और तुलसीदास की भूमि पर शांति लाना। बादशाह खां के साथ गांधी जी ने पीड़ित बिहार का दौरा किया। विस्थापितों को नई आशा और हिम्मत मिली। उन्होंने तबाह हुए मकान और घर देखे, और भागे हुए लोगों से वापस लौट जाने को कहा—उनकी हिफ़ाज़त के लिए खुद अपनी जान दे देने का वादा किया। इसी बीच दिल्ली में भी इसी आग के फैल जाने की आशंका होने लगी।

८१ संदेश एशिया का







मार्च १९४७ में गांधी जी की माउण्टबेटन परिवार से पहली मुलाकात हुई। एशियन रिलेशन्स सम्मेलन में गांधी जी को एशियाई प्रतिनिधियों से यह कहने का मौका मिला कि एशिया का संदेश बुद्धि का संदेश है, एटम बम का संदेश नहीं। एशिया की भूमि पर विभिन्न धर्म जन्मे हैं और हर एक गुरु ने बुद्धि-विवेक का रास्ता ही दिखाया है।

८२ मनुष्य मात्र का बन्धुत्व



एशियाई प्रतिनिधि मण्डल गांधीजी के पास आशा का संदेश लेने आये। तिब्बती, अरब, यहूदी, इंडोनेशिया, वियतनामी, बर्मी—सभी ने उनका मान सम्मान किया। उन्होंने सभी को एक ही सलाह दी। बुद्धि का संदेश, आपस में भाई चारा, कोई वैर-भाव नहीं; अहिंसा का पालन, हिंसा का त्याग—उस ऋषि ने चर्खा चलाते हुए यही कहा।

८३ आजादी आई






अगस्त १९४७ में, स्वाधीनता मिलने से कुछ पहले, गांधी जी को नोग्राखली से बुलावा आया। लेकिन उन्होंने "जलते शोलों में पानी डालने की खातिर" कलकत्ता में कुछ दिन लगा दिये। क्षत-विक्षत शहर में शांति लाने के लिए सुहरावर्दी तथा अन्य नेताओं से बातचीत की। १४ की आधी रात को शपथ ग्रहण करते समय नेहरु के शब्दों के मुताबिक भारत जब सोकर उठा तो "ताकतवर और आजाद" था।

८४ विभाजित भारत









अंत में एतिहासिक लाल किले पर राष्ट्रीय तिरंगा फहराया, इसकी योजना काफी पहले नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने बनाई दी। लेकिन देश का विभाजन हो चुका था और उसके फलस्वरूप घृणा, कटुता और आपसी वैर का वातावरण पैदा हो गया जिनका विस्फोट बाद में दूसरे ढंग से हुआ। इसके अलावा लाखों की तादाद में आते हुए शरणार्थियों की समस्या ने अन्य समस्याओं को नगण्य बना दिया।

८५ शरणार्थियों को राहत



गांधी जी ने विस्थापित व बेघर शरणार्थियों को राहत देने के लिए यथाशक्ति सभी कुछ किया। कुरुक्षेत्र, हरिद्वार, पुराना किला जाकर उनकी दुखभरी कहानियां सुनीं। नवम्बर १९४७ में पहली बार आकाशवाणी के दिल्ली स्टेशन से शरणार्थियों के नाम वक्तव्य प्रसारित करने के लिए उन्हें राजी करने में सफलता मिली।

८६ कश्मीर पर आक्रमण









अगस्त १९४७ में गांधीजी ने जम्मू व कश्मीर का दौरा किया। इस क्षेत्र में साम्प्रदायिक सद्भाव था और गांधी जी ने आशा की थी कि सारा देश इससे सबक लेगा। मगर शीघ्र ही इस सुन्दर धरती को सीमा पार के हमलावरों की लूटमार और गोला-बारूद का शिकार बनना पड़ा जिसका इंतजाम, फ़ौज सहित, पाकिस्तान ने किया था।

८७ साम्प्रदायिक शान्ति के लिए उपवास



फिरकापरस्ती और खून-खराबा भारत की राजधानी पर भी छा गया, और कुछ समय तक अराजकता का बोलबाला रहा। गांधी जी को लगा कि अब उनके पास सत्याग्रह का आखिरी हथियार इस्तेमाल करने के अलावा दूसरा कोई रास्ता बाकी नहीं रह गया है। उन्होंने साम्प्रदायिक शांति कायम होने तक के लिए उपवास रख लिया। इससे सभी सम्प्रदायों की चेतना को गहरा धक्का लगा, नेतागण एकत्र हुए और उन्होंने साम्प्रदायिक शांति बनाए रखने के लिए एक शपथ-पत्र पर हस्ताक्षर किए।

८८. अपशकुन









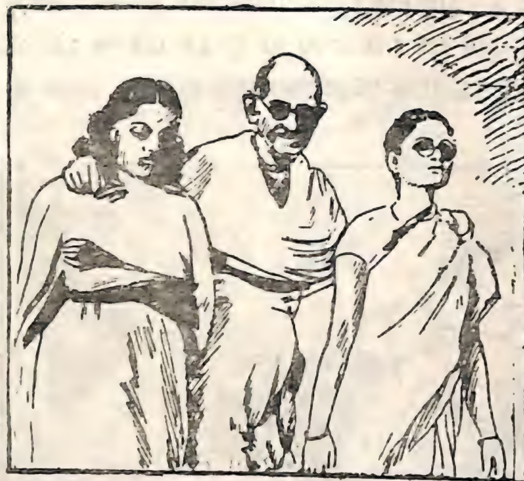


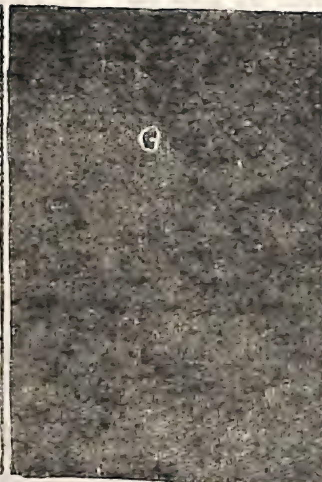
गांधी जी के उपवास से द्रवित होकर भारत ने ५५ करोड़ रुपये का चैक पाकिस्तान को दे दिया। यह चैक भारत ने रोक रखा था। इस बात से और गांधी जी द्वारा मुस्लिम अल्पसंख्यकों की हिमायत करने से—हालांकि वे तो मनुष्यमात्र की हिमायत करने वाले व्यक्ति थे—कट्टर हिन्दुओं में घृणा का प्रसार हुआ। २० जनवरी की सांध्यकालीन प्रार्थना में एक बम फटा जिससे एक दीवार टूटी। भावी हत्यारा गिरफ्तार कर लिया गया। लेकिन गांधी जी के जोर देने पर उसे छोड़ दिया गया। गांधी जी अपनी हिफाजत के लिए अपने आस-पास या प्रार्थना स्थल पर एक भी रक्षक रखने के लिए तैयार न थे।

८९ अंतिम दृश्य











३० जनवरी १९४८। शाम को मन्दिर की घंटियां बजी हैं और धर्मनिष्ठों को प्रार्थना के लिए इकट्ठा होने का बुलावा मिला है। गांधी जी प्रार्थना स्थल की ओर चल पड़े हैं। भीड़ में से एक आदमी प्रणाम करने की मुद्रा बनाता हुआ आगे आता है। गांधी जी हाथ जोड़ते हैं। तीन गोलियां गरजती हैं। बापू गिर पड़ते हैं, उस समय भी मुस्कराते हुए अपने होठों से 'हे राम' कहते हुए। लोग उन्हें उनके मकान में ले जाते हैं। जिस प्रकाश ने दसियों साल तक भारत को रास्ता दिखाया, अब बुझ जाता है—नेहरू का भाषण प्रसारित होता है। गहरे से गहरा अंधेरा दुनिया पर छा जाता है।

९० सारा संसार शोक-संतप्त



लोग उस मनुष्य के पार्थिव शरीर के ग्रास-पास ग्रन्तिम पहरा लगाए बैठे रहे जिसने मौत का डर उतार फेंका था ग्रौर ग्रपनी हिफाजत के लिए बिठाए हर पहरे को हटा कर ही दम लिया था। भाई-भाई के वैर से दुखी होकर, जहां भाई ही भाई की गर्दन काट रहा था, उन्होंने मौत को बिछुड़े दोस्त की तरह न्यौता दिया। मौत ग्राई, वे शहीद बने। ऐसे शहीद इस दुनिया में युगों-युगों के बाद ग्राते हैं। संयुक्त राष्ट्र ने ग्रपना झण्डा झुका दिया।









उन्हें रोते, आंसू बहाते दस लाख पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों के बीच से ले जाया गया। सभी उन्हें बापू मानते थे जैसे उनसे उनका निजी रिश्ता हो। सारे देश पर वे इतने लम्बे समय तक छाए रहे कि उनकी रोमांचक व प्रेरक उपस्थिति के बिना देश के जन-जीवन की कल्पना ही नहीं हो सकती। संसार भारत को गांधी का देश ही कहा करता था।

९२ "बापू अमर हो गये"







उन्हें चन्दन और गुलाबों की चिता पर लिटा दिया गया। लेकिन उन्हें इन चीजों की सुगन्ध की जरूरत न थी क्यों कि उनकी सुगंध संसार के सबसे श्रेष्ठ व दयालु मनुष्य की हैसियत से, जिसका कानून केवल प्रेम का था, तब तक फैलती रहेगी जब तक यह दुनिया सलामत है। चिता की लपटों में उस महात्मा का पार्थिव शरीर समाप्त होता रहा और बड़े व छोटे, शासक व शासित, एक समान आँसू बहाते रहे। उनके राजनीतिक उत्तराधिकारी, जवाहरलाल जैसा दुखी और असहाय अन्य कोई न था।

९३ पवित्र भस्मि



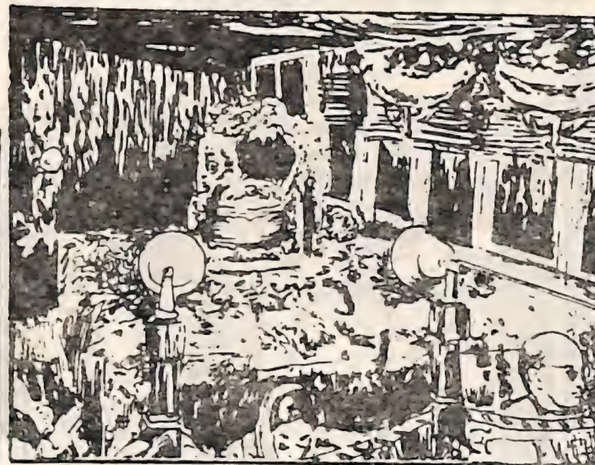


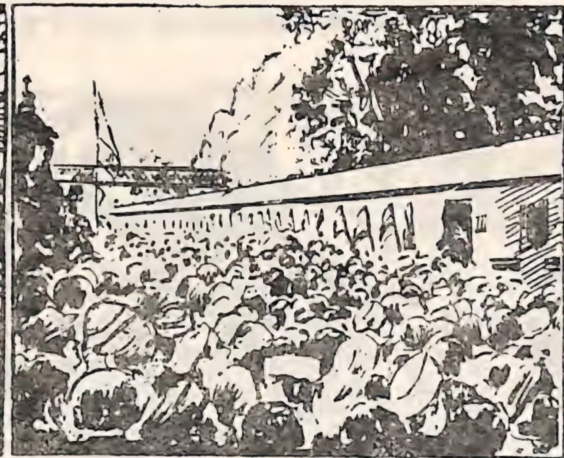


लोगों ने भस्मि चुनी और उसे अनेक कलशों में भर कर जलूस निकाल कर ले गये। हजारों उस मनुष्य की भस्मि पर फूल चढ़ाते हुए परिक्रमा करते रहे जिसने अपने जीवन में सभी प्रकार की प्रशंसा और सम्मान को अनदेखा किया था। उन्होंने हमेशा यही कहा कि मैं भी मामूली से मामूली आदमी की तरह हाड़-मांस वाला मामूली इंसान हूं। लेकिन उनमें देवत्व का कुछ ऐसा अंश था जिसने उन्हें शेष मनुष्यों से श्रेष्ठ बना दिया था।









कलश देश के कोने-कोने में यात्रा करते हुए हर कहीं पहुँचे। इसी तरह उन्होंने अपने जीवन-काल में अपने देश की जनता से मिलने के लिए, उनकी सेवा करने के लिए, असंख्य बार यात्रा की थी। और जहां-जहां फूलों से सजी रेलगाड़ी रुकती, हजारों की तादाद में लोग इकट्ठे होकर पहले की तरह चिल्ला उठते—"महात्मा गांधी की जय"।

९५ पवित्र नदियों में भस्मि-प्रवाह



ग्रौर प्रयाग में, गंगा व यमुना व सरस्वती के संगम त्रिवेणी में, जवाहरलाल ग्रौर देवदास गांधी ने उनकी भस्मि को प्रवाहित करके उस जल को ग्रौर ज्यादा पवित्र बना दिया। इस प्रकार तीर्थ संस्कार की प्राचीन परम्परा के ग्रनुसार ग्रात्मा के मोक्ष की यात्रा की रफ्तार ग्रौर तेज हुई। यह सब उस मनुष्य के लिए हुग्रा जिसने ग्रपने देशवाशियों के उद्धार से ग्रलग ग्रपने लिए किसी मोक्ष की लालसा न की थी।

९६ राजघाट



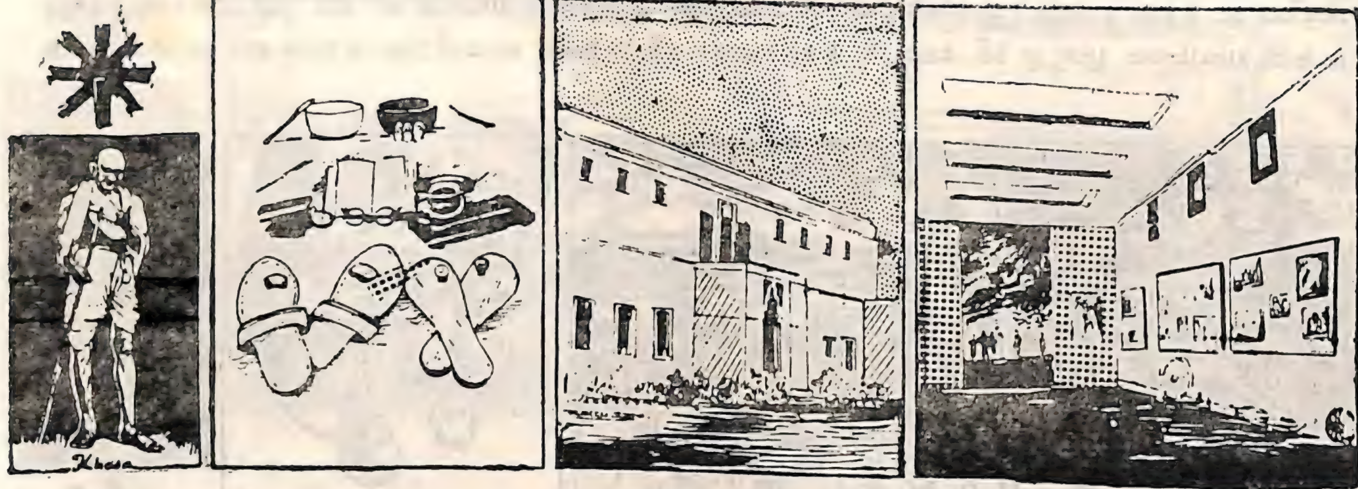






छोटा-सा मिट्टी का टीला। यहीं उनका पार्थिव शरीर चिता पर रखा गया था। यहीं उस शरीर की भस्मि पार्थिव तत्वों में विलीन हुई थी। इसी स्थान पर वे लोग इकट्ठे हुए जिन्हें उन्होंने अहिंसा के विचित्र तरीके से आजादी दिलाई थी। इन लोगों ने सभी धर्मों की प्रार्थनाए गाते हुए, फूलों की वर्षा करके उन्हें श्रद्धांजलि दी जबकि महात्मा के लिए मानव प्रेम ही सर्वश्रेष्ट धर्म था।

९७ स्मृति चिन्ह



लोगों ने उस मनुष्य की कुछ वस्तुएं बहुमूल्य मान कर सुरक्षित रख लीं जिसके पास न तो कोई सम्पत्ति थी और न ही सम्पत्ति में कोई विश्वास था। अकेली सम्पत्ति वही थी जो उसने लिखा था। लिखित वस्तुओं को भी एक स्मारक में संगृहीत कर दिया गया ताकि युगों-युगों तक लोग उन्हें देखते-पढ़ते रहें और पढ़ते वक्त एक ऐसे व्यक्ति की जीवनी और शिक्षाएं याद करें जो किसी दूसरे युग का और भिन्न संसार का प्राणी था।

९८ संसार की श्रद्धांजलि









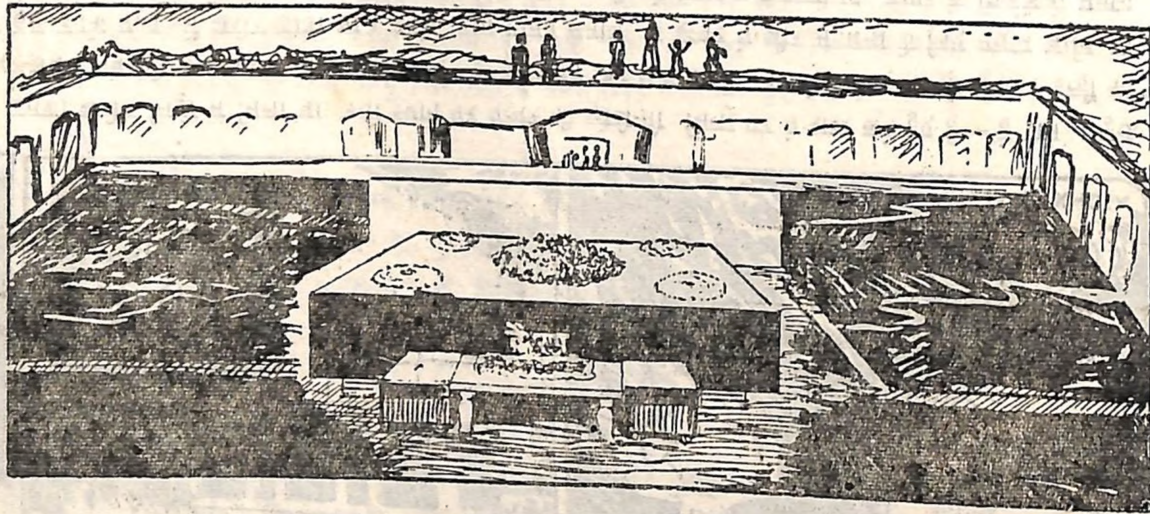


और राजघाट पर सभी राष्ट्रों के स्त्री-पुरुष उस मनुष्य को मूक श्रद्धांजलि देने के लिए एकत्र हुए जो किसी राज-परिवार का न था लेकिन जिसका हृदय जाति और देश की सीमाएं लांघता था जो किसी एक राष्ट्र से सीमित नहीं था। भारत में लोगों ने उसे राष्ट्रपिता का नाम दिया जो समस्त मनुष्यजाति की सज्जनता के लिए संघर्ष करता रहा। और इन्होंने सभी देशों व जलवायु के पेड़-पौधे बोए। महात्मा ने कहा था : "मेरे आस-पास सभी संस्कृतियों की हवा बहती रहे"।

९९ समाधि



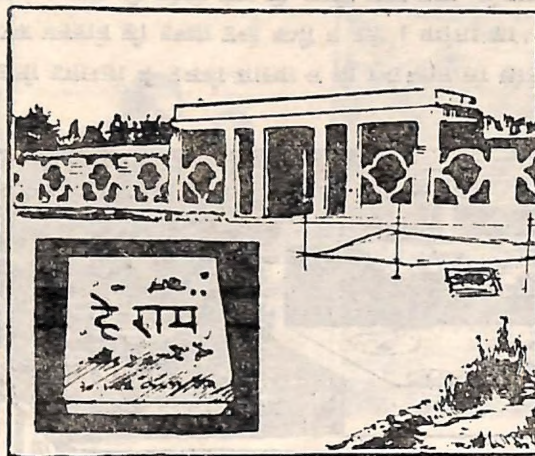


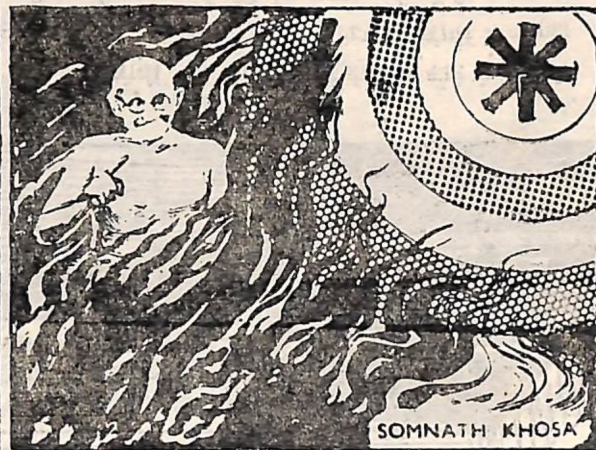


महलों और ऊंची-ऊंची इमारतों में उनकी आस्था न थी। उन्होंने तो छोटे और दुखी लोगों को झोंपड़ियों में ही दिन काटे थे। अपने लिए मूर्ति का स्मारक बनवाने की इच्छा उन्हें कभी न रही। प्रशंसा का स्तुति की भी उन्हें जरूरत न थी। फिर भी लोगों ने उनकी चिता के स्थान पर संगमरमर की चौकी बना दी, उसके आस-पास ग्रेनाइट की समाधि बन गई जैसे कि मानव प्राणियों के अन्तरतम में सदा-सर्वदा के लिए निहित उनकी स्मृति काफी न थी और उनकी आत्मा के लिए पत्थर और धातु का चबूतरा जरूरी था।

१०० 'हे राम'







जिस स्थान पर उनका शरीर मिट्टी में मिला था, उसी स्थान पर पत्थर की छोटी-सी शिला पर ये शब्द खुदे हुए हैं—'हे राम'। कुछ पत्तियां भी इधर-उधर बिखरी हैं। अगर कभी उन्हें अपनी इच्छा बनाने का अवसर मिलता तो वे ये शब्द ही चुनते। इन्हीं का उच्चारण करते हुए उनके प्राण ने शरीर छोड़ा था। उनके राम मानव समाज के ईश्वर थे और मृतात्मा के लिए मनुष्य जाति का उद्धार ही उस ईश्वर की सेवा थी। युगों-युगों से ऐसा कोई मनुष्य नहीं हुआ जिसने हिंसा व सत्तालोलुप संसार के शिकंजे से मनुष्य की आत्मा को मुक्ति दिलाने के लिए इतना कठिन परिश्रम किया हो।

चित्र-प्रदर्शनी सेट पर विभिन्न समाचार पत्रों द्वारा समीक्षा

हिन्दु (मद्रास)—महात्मा गांधी पर ६९ चित्रों के प्रदर्शनी सेट द्वारा बहुत ही दिलचस्प चीज प्रस्तुत की गई है जो कि गांधीजी का बचपन से मृत्यु तक पूरा जीवन प्रतिबिम्बित करता है। यह चित्र संग्रह कालेज और स्कूल के विद्यार्थियों के लिए उच्च आदर्शों का एक दर्पण होना चाहिये जिनको गांधी जी ने पूरी तन्मयता से अपने जीवन में उतारते हुए औचित्य का मार्ग अपनाया।

दी हिन्दुस्तान टाइम्स (नई दिल्ली)—जन सम्पर्क विभाग द्वारा गांधीजी के जीवन पर परिचय सहित चित्र प्रदर्शनी का सेट बहुत ही आकर्षित है। वास्तव में यह चित्रों में वर्णित आत्म कथा ही है। यह चित्र समूह उनके जीवन के दोनों पहलुओं—राजनीतिक कार्य-क्षेत्र और मानव-सेवा के सिद्धान्त तथा हरिजन भलाई व व्यावहारिक कार्यक्रम—को सही ढंग से चित्रित करता है।

पॉयनियर (लखनऊ)—गांधी चित्र प्रदर्शनी सेट—गांधीजी के चित्रों का इतने बड़े साइज़ में प्रकाशित करना एक कठिन कार्य है और छोटी मोटी सामाजिक अथवा शैक्षणिक संस्था के लिए ऐसा कर पाना धन की दृष्टि से बहुत ही असंभव है। यह चलती फिरती आकर्षित चित्र-प्रदर्शनी उन की प्रार्थना का उत्तर है। इसमें ६९ सुन्दर चित्र हैं और प्रत्येक चित्र पूरे परिचय सहित दिया गया है। एक अनुभवहीन मनुष्य भी इस चित्र सेट प्रदर्शनी को बिना किसी मदद के सरलता से लगा सकता है। चित्र और उनका परिचय क्रमबद्ध संख्या में दिया गया है ताकि उनको क्रमवार सजाया जा सके।

महात्मा गांधी पर चित्र-प्रदर्शनी सेट

६९ चित्रों में

(हिन्दी और अंग्रेजी में प्राप्य)

११" X ११" साईज में सुन्दर और मोटे कागज पर—कहीं भी प्रदर्शनी लगा सकते हैं

मूल्य : केवल १० रुपये प्रति सेट

वजन : १२०० ग्राम — ३-५० रुपये रजिस्टर्ड पार्सल का खर्च अतिरिक्त

५ अथवा अधिक सेट मंगवाने पर १५ प्रतिशत की विशेष छूट

(पार्सल रेल द्वारा भेजा जायेगा और भाड़े की अदायगी मंगवाने वाले को करनी होगी)

मंगवाने के लिए कृपया लिखें :

गांधी जन-सम्पर्क समिति

६, राजघाट कॉलोनी, नई दिल्ली-१

जनवरी, १९७० : ३००० — राजेश प्रेस, दिल्ली-६ — फोन : ५६४५१६